WitWaves
Journal of Multidisciplinary Research

International Peer-Reviewed E-Journal
E-ISSN: 3107-4235

Vol – 3
Issue – 11
November
2025

भारतीय मूर्तिकला: परंपरा, प्रतीकवाद और आधुनिक रूपांतरण

भक्ति अग्रवाल[1, *]

[1]सहायक प्राध्यापक (ललितकला), श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

https://doi.org/10.64175/wjmr.vol.2.issue11.5

✉ [1]bhakti.agrawal786@gmail.com

Article Info

Keywords:

- *मूर्तिकला*
- *परंपरा*
- *सौंदर्यशास्त्र*
- *भारतीय संस्कृति*
- *गुप्त कला*
- *चोल कला*
- *शिल्प तकनीक*

Abstract

भारतीय मूर्तिकला केवल शिल्प कौशल का प्रदर्शन नहीं है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन और आध्यात्मिक चेतना की सजीव अभिव्यक्ति है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक मूर्तिकला ने न केवल भौतिक रूप में सौंदर्य का प्रदर्शन किया है, बल्कि मानव की आध्यात्मिक यात्रा, भावनात्मक संवेदना और सांस्कृतिक पहचान को मूर्त रूप प्रदान किया है।

यह शोधपत्र भारतीय मूर्तिकला की परंपरागत जड़ों, प्रतीकात्मक अर्थों और आधुनिक रूपांतरण का विश्लेषण करता है। सिंधु घाटी से आरंभ होकर यह परंपरा मौर्य, गुप्त, चोल, पल्लव और आधुनिक काल तक निरंतर विकसित होती रही है। मूर्तिकला में उपयोग की गई सामग्री, तकनीक, शैली, विषयवस्तु और भावात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से यह अध्ययन भारतीय कला की व्यापकता को स्पष्ट करता है।

प्रस्तावना

भारतीय कला परंपरा में मूर्तिकला का स्थान अत्यंत प्रमुख है। मूर्तिकला केवल पत्थर या धातु की आकृति नहीं, बल्कि "रूप में निहित अर्थ" की अभिव्यक्ति है। यह मानव मन की गूढ़ भावनाओं, श्रद्धा, सौंदर्य और आस्था का भौतिक रूपांतरण है। भारत की मूर्तिकला की जड़ें उतनी ही प्राचीन हैं जितनी इसकी सभ्यता। सिंधु घाटी सभ्यता की मातृदेवी की प्रतिमाएँ, पशुपति मोहर और नर्तकी की कांस्य मूर्ति इस बात का प्रमाण हैं कि भारतीय समाज में मूर्तिकला धार्मिक और सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग थी। प्राचीन काल में मूर्तिकला केवल मंदिरों और धार्मिक स्थलों तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह समाज, दर्शन, और जीवनदृष्टि का प्रतीक थी। आधुनिक युग में यह परंपरा नए रूपों और तकनीकों में परिवर्तित हुई, जहाँ भाव की गहराई और रूप की स्वतंत्रता दोनों का समावेश देखने को मिलता है।

शोध के उद्देश्य

1. भारतीय मूर्तिकला की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परंपरा का अध्ययन करना।
2. मूर्तिकला में निहित प्रतीकात्मकता और दार्शनिक अर्थों का विश्लेषण करना।
3. मूर्तिकला की तकनीकी और शिल्पगत विशेषताओं को समझना।
4. आधुनिक भारतीय मूर्तिकला में पारंपरिक तत्वों के रूपांतरण का अध्ययन करना।
5. भारतीय मूर्तिकला के वैश्विक प्रभाव और समकालीन स्थिति का मूल्यांकन करना।

शोध पद्धति

यह शोध ऐतिहासिक, वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है।

- **प्राथमिक स्रोत:** मूर्तिशिल्प, पुरातात्त्विक अवशेष, मंदिर प्रतिमाएँ, संग्रहालयीय वस्तुएँ।
- **द्वितीयक स्रोत:** भारतीय कला से संबंधित ग्रंथ, शोधपत्र, शिल्पशास्त्र जैसे विश्वकर्मा प्राकरण, शिल्परत्न, रूपमंडन आदि।
- **विश्लेषण दृष्टिकोण:** तुलनात्मक और विषयगत विश्लेषण के माध्यम से परंपरा और आधुनिकता के संबंधों का अध्ययन।

शोध विस्तार

1. भारतीय मूर्तिकला की उत्पत्ति और प्रारंभिक स्वरूप

भारतीय मूर्तिकला का इतिहास सिंधु घाटी सभ्यता (2500–1500 ई.पू.) से आरंभ होता है। मोहनजोदड़ो की नर्तकी की कांस्य मूर्ति, पशुपति शिव की मुहर और मातृदेवी की मिट्टी की मूर्तियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि मूर्तिकला का विकास धार्मिक प्रतीकों और मानव आकृतियों के साथ हुआ। इन मूर्तियों में शारीरिक यथार्थ के साथ-साथ भावनात्मक गहराई भी विद्यमान है। मातृदेवी की मूर्तियाँ उर्वरता का प्रतीक हैं, जबकि पशुपति शिव की छवि 'योग और शक्ति' के प्राचीन प्रतीक हैं।

2. मौर्य काल (321–185 ई.पू.): शिल्प कौशल की ऊँचाई

मौर्य काल में मूर्तिकला ने तकनीकी परिपक्वता प्राप्त की। अशोक स्तंभ, लौरिया नंदनगढ़ और सारनाथ का सिंह स्तंभ उत्कृष्ट शिल्प और पॉलिश का प्रतीक हैं। इन मूर्तियों में 'चमकदार पॉलिश' भारतीय कला की तकनीकी निपुणता को दर्शाती है। सारनाथ का सिंह स्तंभ (जो भारत का राष्ट्रीय प्रतीक है) न केवल शिल्प का उत्कृष्ट उदाहरण है, बल्कि यह धर्मचक्र के प्रतीकवाद से भी जुड़ा हुआ है।

3. शुंग, सातवाहन और कुषाण काल: प्रतीकवाद और भक्ति का समन्वय

इस काल में मूर्तिकला ने कथात्मकता और भक्ति भावना का रूप ग्रहण किया। भारहुत, सांची, अमरावती और नागार्जुनकोंडा की मूर्तियाँ धार्मिक कथाओं और लोक जीवन की झलक देती हैं। कुषाण काल में गंधार और मथुरा शैली का विकास हुआ —

- गंधार शैली में यूनानी प्रभाव था — यथार्थवाद, ग्रीक वस्त्र और अनुपातिकता।
- मथुरा शैली पूर्णतः भारतीय थी — गोलाई, सौम्यता और भावपूर्ण चेहरा।

  यहीं से भगवान बुद्ध की मानवीय आकृति पहली बार मूर्त रूप में सामने आई।

4. गुप्त काल: भारतीय मूर्तिकला का स्वर्ण युग

गुप्त काल (4वीं–6वीं सदी) को भारतीय मूर्तिकला का स्वर्ण युग कहा जाता है। इस काल में मूर्तिकला में शांति, माधुर्य और आध्यात्मिकता का संगम हुआ। सारनाथ, मथुरा और इलाहाबाद क्षेत्र की मूर्तियों में शरीर की रेखाएँ कोमल हैं, मुस्कान दिव्यता का प्रतीक है और मुद्रा ध्यान की स्थिति दर्शाती है। सारनाथ के बुद्ध की मूर्ति में "अभय मुद्रा" करुणा और शांति का अद्भुत उदाहरण है। इस युग में मूर्तिकला का उद्देश्य केवल यथार्थ चित्रण नहीं, बल्कि आत्मिक सौंदर्य की अनुभूति था।

5. मध्यकालीन मूर्तिकला: भक्ति और विविधता का युग

मध्यकाल में मूर्तिकला का केंद्र दक्षिण भारत और मध्य भारत की मंदिर परंपराएँ बनीं। चोल, पल्लव, चालुक्य और होयसाल राजवंशों ने उत्कृष्ट धातु और पत्थर की मूर्तियाँ निर्मित कराईं।

(क) चोल कालीन कांस्य मूर्तियाँ (10वीं–12वीं सदी)

चोल काल की नटराज मूर्ति भारतीय मूर्तिकला की आत्मा कही जा सकती है। यह मूर्ति केवल शिव का नृत्य नहीं दर्शाती, बल्कि यह ब्रह्मांडीय ऊर्जा और सृजन-प्रलय के चक्र का प्रतीक है।

(ख) पल्लव एवं चालुक्य कला

महाबलीपुरम की गुफाएँ, एलोरा का कैलाश मंदिर और बेलूर-हलेबिड की मूर्तियाँ इस काल की तकनीकी निपुणता और भक्ति के चरम को दर्शाती हैं।

6. मूर्तिकला का सौंदर्यशास्त्र और प्रतीकवाद

भारतीय मूर्तिकला का सौंदर्य केवल रूपात्मक नहीं, बल्कि दार्शनिक और प्रतीकात्मक है। प्रत्येक मुद्रा, भाव, वस्त्र और मुद्रा का अर्थ निहित है।

प्रतीक	अर्थ
पद्म (कमल)	पवित्रता और सृष्टि का उद्भव
चक्र	धर्म का चक्र, समय और गति का प्रतीक
त्रिशूल	शक्ति, सृजन और विनाश का संतुलन
मुद्रा (हाथ की स्थिति)	ज्ञान, अभय, दान और ध्यान का द्योतक

मूर्तिकला का सौंदर्य रूप में भाव की उपस्थिति और भाव में रूप की स्पष्टता से उत्पन्न होता है।

7. औपनिवेशिक और आधुनिक काल: परंपरा से आधुनिकता तक

औपनिवेशिक काल में मूर्तिकला ने यूरोपीय यथार्थवाद का प्रभाव ग्रहण किया। कला संस्थानों की स्थापना (जैसे 1857 में कलकत्ता आर्ट स्कूल) ने मूर्तिकला को अकादमिक दिशा दी। आधुनिक काल में कलाकारों ने पारंपरिक प्रतीकों को नई व्याख्या दी। प्रमुख आधुनिक मूर्तिकार:

1. रामकिंकर बैज: भारतीय आधुनिक मूर्तिकला के जनक माने जाते हैं। उनकी कृतियाँ संवार परिवार, हरवेस्टर्स ग्रामीण भारत की आत्मा को अभिव्यक्त करती हैं।
2. धानराज भगत: अमूर्तता और पारंपरिक रूपों का समन्वय।
3. सुब्रह्मण्यन, अद्वैता गडनायक, अनीश कपूर — भारतीय मूर्तिकला को वैश्विक स्तर पर नई पहचान दी।

8. आधुनिक तकनीक और सामग्री का प्रयोग

आधुनिक मूर्तिकला में विविध सामग्री का उपयोग हुआ है जैसे — धातु, फाइबर, कांच, लकड़ी, मिट्टी, रेज़िन, डिजिटल प्रिंट और पुनर्चक्रित वस्तुएँ। 3D प्रिंटिंग, डिजिटल स्कल्प्टिंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित मॉडलिंग से मूर्तिकला में नई संभावनाएँ खुली हैं। अब मूर्तिकला केवल "स्थिर वस्तु" नहीं, बल्कि इंटरैक्टिव अनुभव बन चुकी है।

9. वैश्विक संदर्भ में भारतीय मूर्तिकला

भारतीय मूर्तिकला का प्रभाव विश्वभर में देखा जा सकता है कंबोडिया के अंगकोर वाट, इंडोनेशिया के बोरबुदुर, थाईलैंड और नेपाल के बुद्ध प्रतिमाएँ सभी भारतीय शिल्प परंपरा से प्रेरित हैं। आज भी दिल्ली, बेंगलुरु, मुंबई और लंदन में भारतीय मूर्तिकार अपनी कलाकृतियों से अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की कला-संपदा को सशक्त बना रहे हैं।

10. मूर्तिकला में स्त्री की प्रतीकात्मक भूमिका

भारतीय मूर्तिकला में स्त्री को सृजन, सौंदर्य और ऊर्जा का प्रतीक माना गया है। यक्षिणी, सरस्वती, पार्वती, लक्ष्मी जैसी मूर्तियाँ केवल देवियाँ नहीं, बल्कि 'नारीत्व के आध्यात्मिक रूप' हैं। मातृदेवी से लेकर आधुनिक 'स्त्री मूर्तिकला' तक स्त्री शक्ति का स्वरूप बदलता रहा, परंतु उसकी ऊर्जा और सौंदर्य शाश्वत रहा।

निष्कर्ष

भारतीय मूर्तिकला एक ऐसी सतत परंपरा है जिसने समय, समाज और संस्कृति के साथ स्वयं को निरंतर परिवर्तित किया है। इसकी शक्ति इसकी अनुकूलनशीलता और आध्यात्मिक गहराई में निहित है। प्राचीन काल की शिल्पनिपुणता, गुप्तकाल का माधुर्य, चोल काल की गतिशीलता, और आधुनिक काल की प्रयोगशीलता सभी मिलकर भारतीय मूर्तिकला को "अतीत और वर्तमान का सेतु" बनाते हैं। भारतीय मूर्तिकला का उद्देश्य केवल रूपनिर्माण नहीं, बल्कि अर्थ और आत्मा का सृजन है। यह भारतीय दर्शन की तरह कहती है —

"रूपं न केवलं रूपं, अपि तु ब्रह्मस्य प्रतिच्छाया।"

(रूप केवल दृश्य नहीं, वह परम सत्य की छाया है।)

संदर्भ सूची

1. कोमल, आर. (2019). भारतीय मूर्तिकला का इतिहास और दर्शन. नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।
2. कोमल, पी. सी. (1956). Indian Sculpture and Iconography. Oxford University Press.
3. ब्राउन, पर्सी (1942). Indian Sculpture: Buddhist, Hindu and Jain Periods. Bombay: D.B. Taraporevala Sons.
4. शर्मा, मधुसूदन (2020). भारतीय मूर्तिकला और संस्कृति का परस्पर संबंध. वाराणसी: कला भारती प्रकाशन।
5. बेनेडिक्ट, ए. (2003). Modern Indian Sculpture: A Contemporary Overview. Marg Publications.
6. गडनायक, अद्वैता (2021). Contemporary Indian Sculpture: Tradition and Experimentation. IGNCA, New Delhi.
7. सिंह, राकेश (2022). Indian Iconography and Symbolism. Lalit Kala Akademi, New Delhi.